हिन्दी उपन्यास

हिन्दी प्रतिष्ठा
तृतीय खण्ड (III)

Prof- Roushan Kumar
Hindi (A)
J. K. C. Biraul DBG

⟹ आधुनिक काल में विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी उपन्यास के विकास का अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों को दिया जा सकता है क्योंकि हिन्दी में इस विधा का श्रीगणेश अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों की लोकप्रियता से हुआ। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जी 'सरस्वती' में प्रकाशित एक निबन्ध 'उपन्यास-रहस्य' में इस बात स्वीकार किया है कि उपन्यास के प्रचलन, विकास एवं सृजन का श्रेय पश्चिमी देशों के लेखकों को ही जिनसे प्रेरणा लेकर हिन्दी में भी उपन्यास रचना जाने लगी है। बालकृष्ण भट्ट जी भी इसकी पुष्टि करते हुए लिखा, "हम लोग जैसा और बातों में अंग्रेजी की नकल करते जाते हैं, उपन्यास का लिखना भी उन्हीं के दृष्टांत पर सीख रहे हैं।" हिन्दी में उपन्यास का आरम्भ भी अंग्रेजी से अनुदित उपन्यासों से माना जाता है।

⟹ सन् 1853ई. में वंशीधर द्वारा थॉमस डे के लोकप्रिय उपन्यास 'सैंडफोर्ड एण्ड मर्टन' का अनुवाद किया गया तथा डॉ. जानसन के उपन्यास 'रासेलास' का हिन्दी अनुवाद सन् 1879ई. में किया गया। हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद रहा है।
इस सम्बन्ध में जिन दो उपन्यासों का नाम लिया जाता है, वे हैं - श्रद्धाराम फुल्लोरी कृत 'भाग्यवती' (सन् 1877ई.) तथा लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखा गया 'परीक्षा गुरु' (सन् 1882ई.)।

Scanned with CamScanner

इनमें से प्रथम उपन्यास में सुधारवादी प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। तथा द्वितीय उपन्यास में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को श्रेष्ठ प्रमाणित करते हुए उपदेशवृत्ति का आधार ग्रहण किया गया है।

⇒ हिन्दी का प्रथम उपन्यास कौन सा है इस सम्बन्ध में निम्न नामों का उल्लेख विद्वानों ने किया है :

(1.) परीक्षा गुरु (1882 ई.) - लेखक लाला श्री निवासदास।

(2.) देवरानी जेठानी की कहानी (1870 ई.) - लेखक पं. गौरीदत्त।

(3.) निस्सहाय हिन्दू (1890 ई.) - लेखक राधाकृष्णदास

(4.) भाग्यवती (1877 ई.) - श्रद्धाराम फुल्लौरी।

यदि कालक्रम की दृष्टि से विचार करें तो 'भाग्यवती' (1877 ई.) हिन्दी का पहला उपन्यास है; किन्तु इसमें औपन्यासिक तत्व पूर्णतः विद्यमान नहीं हैं जबकि 'परीक्षा गुरु' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी का पहला उपन्यास माना है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि स्वयं लाला श्रीनिवासदास अपनी रचना 'परीक्षा गुरु' को उपन्यास नहीं मानते।

⇒ हिन्दी उपन्यास के विकासक्रम का अध्ययन करने के लिए हम उसे तीन चरणों में विभक्त कर सकते हैं।

'यदि 'प्रेमचंद' को हिन्दी उपन्यासकारों में केन्द्रबिन्दु मान लें तो ये तीन चरण निम्नवत हैं :

① प्रेमचन्द्र पूर्व उपन्यासकार

② प्रेमचन्द्र युगीन उपन्यासकार

③ प्रेमचन्द्रोत्तर उपन्यासकार

Scanned with CamScanner